VIBRANT GANGA

गोमती नदी

समृद्धि का आधार

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

विस्तृत जानकारी

- गोमती नदी एक भूजल आधारित नदी है जो उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले में 200 मीटर समुद्र तल की ऊंचाई पर गोमत ताल से निकलती है।
- गोमती बारहमासी नदी है जिसकी लंबाई 960 किलोमीटर है। इसका जल ग्रहण क्षेत्र 30,437 वर्ग किलोमीटर है, जो केवल उत्तर प्रदेश से होकर बहती है।
- यह गंगा के मैदानीं जैव–भौगोलिक क्षेत्र (7ए) से होकर बहती है।
- पीलीभीत से बहते हुए यह सीतापुर, लखनऊ, बाराबंकी, सुल्तानपुर और जौनपुर जिलों से होकर गुजरती है और कैथी, वाराणसी में बाएं किनारे पर गंगा नदी से मिलती है।
- जलवायु अर्ध–शुष्क से अर्ध–आर्द्र है।
- यह विशेष रूप से धीमी प्रवाह से बहती है और वर्षा ऋतु में इसका प्रवाह तेज हो जाता है।
- गोमती नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ गाची, सरायन और साई है।

मुख्य विशेषताऐं

- गोमती नदी बेसिन में भू–आकृतिक सतहें, सक्रिय बाढ़ के मैदान की सतह, नदी घाटी की सतह और अपलैण्ड टेरिस सतह, तालाबों, झीलों, विर्स्पस्कार, नदी की पुरानी धारा और गोखुर झील जैसी सूक्ष्म–जियोमॉर्फिक विशेषताओं को प्रदर्शित करती है।
- यह क्षेत्र उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन प्रकार के अंर्तगत आता है।
- गोमती बेसिन में मुख्य रूप से दो प्रकार क जलोढ़ होते हैं, पुराने जलोढ़ (बांगर) और नए जलोढ़ (खादर)।
- गोमती नदी में केवल एक मगरमच्छ की प्रजाति, मगर (*क्रोकोडायलस पलुस्ट्रिस*) दर्ज की गई है।

गोमती नदी को तीन क्षेत्रों मे विभाजित किया गया है–

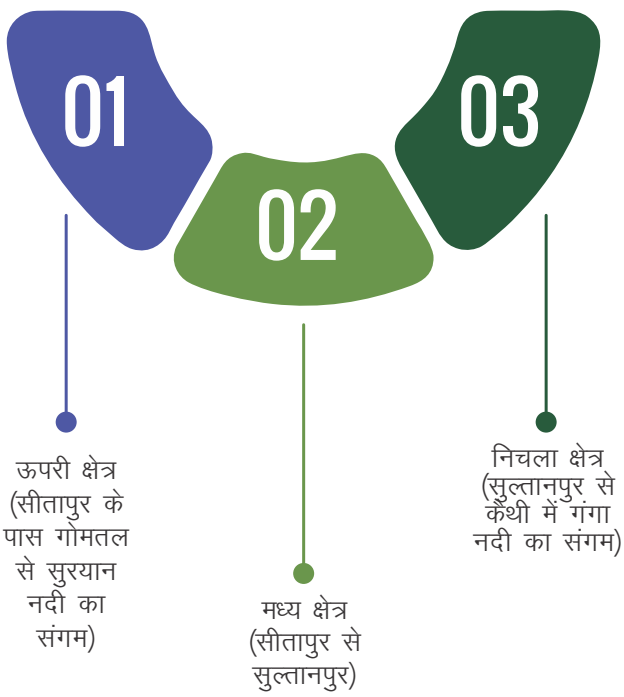

- पॉच कछुओं की प्रजातियॉ, जैसे कि क्राउन रिवर टर्टल (*हार्डेला थुरजी*), सुंदरी (*लिसेमिस पंक्टाटा*), पचेरा (*निल्सोनिया गैंजेटिका*), तिलहारा कछुआ (*पंगशुरा टेक्टा*) और पचौरिया (*पंगशुरा टेंटोरिया*) गोमती नदी से दर्ज की गई है।
- गोमती नदी में 13 जेनेरा से संबंधित 102 पक्षीयों की प्रजातियों को दर्ज किया गया है।
- नदी में 42 जेनेरा से संबंधित 56 मछली प्रजातियों को दर्ज किया गया है, क्लाउन नाइफ फिश (*चिताला चिताला*), ब्रोंज फैदर बैक (*नोटोपटेरस नोटोप्टेरस*) और बाटा (*लेबीओ बाटा*) कुछ महत्वपूर्ण कार्प हैं।

संकटग्रस्त (EN) प्रजातियॉ

सरीसृप
क्राउंड रिवर टर्टल
पचेरा

पक्षी
पंचीरा

रोचक तथ्य

- हिंदू पौराणिक कथाओं में, गोमती नदी को ऋषि वशिष्ठ की बेटी माना जाता है। माना जाता है कि एकादशी (सनातन धर्म–हिंदू कैलेंडर का ग्यारहवां दिन) पर नदी में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं।
- नैमिष, पुराणों, रामायण और महाभारत में वर्णित एक पवित्र वन, गोमती नदी के किनारे स्थित है। महाभारत का वर्णन सबसे पहले नैमिष वन में हुआ था।
- प्राचीन शिव मंदिर, एककोटरनाथ महादेव मंदिर और सुनसिरनाथ महादेव मंदिर, गोमती नदी के किनारे स्थित हैं।
- वह स्थान जहाँ गोमती गंगा से मिलती है, लोकप्रिय रूप से "पवित्र संगम" के नाम से जाना जाता हैं। प्रसिद्ध मार्कंडेय महादेव मंदिर संगम के पास स्थित है।

नदी-परिदृश्य (रिवरस्केप) को बदलने वाले कारक

- कई वर्षों से, भूमि उपयोग मे हुए बदलाव और तेजी से शहरीकरण ने नदी के प्रवाह को काफी प्रभावित किया है। मछलियों की अत्यधिक मृत्यु गोमती नदी से रिपोर्ट किए गए है जो जलीय आवास परिवर्तन के परिणामों में से एक थी।
- चीनी कारखानों और डिस्टिलरी से औद्योगिक कचरा, घरेलू कचरा गोमती नदी में फेका जाना प्रदूषण का प्रमुख कारण हैं, जो जलीय पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता हैं।
- कृषि अपवाह नदी में कीटनाशकों और उर्वरकों का भार बढाता है, जिससे इसके भौतिक–रासायनिक गुणों में परिवर्तन होता हैं।
- गोमती नदी से अधिक मछली पकड़ने, जहर के अत्यधिक उपयोग और महीन जाली के आकार और नायलॉन मच्छरदानी के उपयोग से मछली की विविधता नकारात्मक रूप से प्रभावित हुई है।

एन एम सी जी
राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और
गंगा संरक्षण विभाग,
मेजर ध्यानचंद्र स्टेडियम, नई दिल्ली–110001

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

जी ए सी एम सी
गंगा एक्वालाइफ कनजर्वेशन मॉनिटरिंग सेंटर
भारतीय वन्य जीव संस्थान
पोस्ट बॉक्स न. 18, मोहब्बेवाला, देहरादून–248002, उत्तराखंड
फोन न.- 91-135-260112-115
wii.gov.in/nmcg_phase2_introdution